मध्यकालीन चित्रकला

भारत में चित्रकला की एक समृद्ध परंपरा रही थी। प्राचीन काल में चित्रकला का आरंभिक रूप स्तंभ चित्रकारी के रूप में प्रकट हुआ। स्तंभ चित्रकारी भीमबेटका के गुफा चित्र से आरंभ होकर अजंता, बाघ, बादामी एवं एलोरा की चित्रकारी तक चलती रही।

फिर एक सामान्य धारणा यह है कि एलोरा के पश्चात् भारतीय चित्रकला का पतन हो गया तथा फिर एक बार चित्रकला मुगल काल में प्रकट हुई। परंतु परवर्ती काल के शोधों ने इस धारणा को चुनौती दी है। वस्तुतः एलोरा चित्रकला के पश्चात् चित्रकला का पतन नहीं हुआ, अपितु स्तंभ चित्रकारी का महत्व कम हो गया और उसकी जगह लघु चित्रकारी का महत्व बढ़ गया। लघु चित्रकला को विकसित करने में जैनियों का बड़ा योगदान रहा। जैनियों ने ताल-पत्रों पर चित्र बनाए तथा यह चित्र विविध पृष्ठभूमि से लिए गए थे। आगे पाल चित्रकला पर भी इसका प्रभाव देखा जा सकता था।

सबसे बढ़कर जैन चित्रकला का प्रभाव गुजराती शैली पर पड़ा। आरंभिक जैन चित्रकला तालपत्र पर निर्मित की गई थी। फिर जब आगे हिंदुस्तान में कागज का प्रयोग आरंभ हुआ, तो फिर कागज पर चित्रकारी की जाने लगी। गुजराती चित्रकला ने भी कागज को अपनाया। गुजराती चित्रकला में प्रकृति तथा उसके विभिन्न रूपों का चित्रण किया जाने लगा। उदाहरण के लिए, बादल, आकाश, समुद्र आदि के चित्र। आगे इसने राजपूत कला पर अपना प्रभाव छोड़ा। राजपूत कालीन चित्रकला में विभिन्न ग्रंथों के चित्र बनाए जाने लगे। उदाहरण के लिए, रामायण, महाभारत, राग माला, बारहमासा आदि। फिर इस काल में चौर पंचशिका शैली का विकास हुआ। यह बिल्हण के द्वारा लिखित पुस्तक थी। इसमें कथा लेखन के साथ-साथ चित्र भी बनाए जाने लगे। इसने निश्चय ही चित्रकला की पोथी शैली को प्रेरणा प्रदान की। पोथी शैली से तात्पर्य है पांडुलिपि चित्रकारी। जब चित्र के माध्यम से विभिन्न ग्रंथों का एल्बम तैयार किया जाने लगा, तो इसे पांडुलिपि चित्रकारी का नाम दिया गया।

आगे मुगल चित्रकला को प्रेरित करने में भी चौर पंचशिका शैली का योगदान रहा। मुगल शासकों के अंतर्गत बड़े पैमाने पर पांडुलिपि चित्रकारी निर्मित की गई। उदाहरण के लिए, रामायण, महाभारत, पंचतंत्र की कथा, नल-दमयंती की कथा आदि। अकबर के दरबार में 17 चित्रकारों में सात चित्रकार गुजरात से आए थे।

सल्तनतकालीन चित्रकला

आरम्भ में ऐसा माना जाता रहा था कि जीवित प्राणियों का चित्र बनाना इस्लाम में वर्जित था, इसलिए सल्तनत काल में चित्रकला का विकास नहीं हुआ था। किंतु नवीन शोधों में यह धारणा खंडित हो गई और यह प्रमाणित हो चुका है कि इस काल में स्तम्भ चित्रकारी का विशेष प्रचलन था तथा पुस्तकों को भी चित्रों से सजाया जाता था।

उदाहरण के तौर पर, यह देखा जा सकता है कि जब इल्तुतमिश खलीफा के दूत का स्वागत कर रहा था, इस क्रम में उसने एक ऐसा प्रवेश द्वार बनवाया था जिस पर जीवित प्राणियों के चित्र बनाए गये थे। उसी प्रकार, अलाउद्दीन खिलजी के उत्तराधिकारी मुबारकशाह खिलजी के विषय में कहा जाता है उसने कुछ ऐसे टेंट बनवाए थे जिन पर विभिन्न प्रकार के चित्र अंकित थे। इतना ही नहीं, फिरोजशाह तुगलक के विषय में कहा जाता है कि उसने इस्लाम की भावना के अनुसार कुछ चित्रों को नष्ट कराया था। इसका अर्थ है कि उस काल में भी स्तम्भ चित्रकारी का प्रचलन था।

■ चौरपंचशिका अथवा लौर चंदा चित्रकारी

जैन तथा इस्लामी पांडुलिपियों में होने वाले क्रमिक परिवर्तन ने कालांतर में स्थायित्व ग्रहण कर एक नवीन चित्रकला का रूप ग्रहण कर लिया। इस विशेष समूह को चौरपंचशिका अथवा लौर चंदा चित्रशैली के नाम से जाना जाता है। इस तथ्य की पुष्टि पांडुलिपियों के उस समूह से होती है, जिसमें चटकीली एवं जीवंत रंग योजना, बेलबूटों और अलंकरण विधानों से युक्त शांत तथा परिष्कृत रूप में लघु चित्र विद्यमान हैं।

चौर पंचशिका पांडुलिपियों में दिए गए चित्रांकन बड़े असमान स्वरूप वाले हैं तथा इनमें से कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो कुछ पांडुलिपियों में तो निश्चित रूप से मिलती हैं, जबकि दूसरे में बिल्कुल ही प्राप्त नहीं होती हैं। उदाहरण के लिए, लंदन के प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय तथा जॉन रेलेंड्स पुस्तकालय मैनचेस्टर में संग्रहित लौर चंदा की पांडुलिपि के चित्रांकनों में उच्च कोटि की परिष्कृत चित्रकला के चिह्न प्राप्त होते हैं जो अन्य समकालीन पांडुलिपि में प्राप्त नहीं होते, जबकि यहीं के संग्रहालय में संग्रहित लौर चंदा तथा 1516 के महाभारत के अरण्य पर्व तथा चौर पंचशिका पांडुलिपियों में शैलीगत दृष्टिकोण से समानता दिखती है।

मुगल काल के प्रारंभिक दिनों में दिल्ली के क्षेत्र में चित्रित महापुरूष नामक चौरपंचशिका चित्र काफी रोचक हैं। इसके लघुचित्र उस शैली के हैं जिन्होंने 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की जैन परंपरा को जीवित रखा। हालांकि ऐसी पांडुलिपियों पर कालक्रम अंकित नहीं होने से इसके काल निर्धारण में काफी समस्या है। चौरपंचशिका शैली के कुछ चित्रों पर कालक्रम को दर्शाने वाले पंचकोणीय जम का चित्रण है। चूँकि हम जानते हैं कि प्रारंभिक अकबरी युग के चित्रों की एक प्रमुख विशेषता इस जम के चित्रण की रही है, तो माना जाता है कि चौर पंचशिका समूह के कुछ चित्र प्रारंभिक अकबरी युग के हो सकते हैं। जहाँ तक चौरपंचशिका समूह के चित्र के क्षेत्र निर्धारण का सवाल है, तो कुछ विद्वानों के अनुसार यह सारा समूह दिल्ली से जौनपुर तक फैले उत्तर भारतीय प्रदेश से संबंधित है, जबकि अन्य विद्वान इन पांडुलिपियों को मेवाड़ अथवा मालवा प्रदेश की विरासत बताते हैं, जहाँ की सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक परिस्थितियां इस विशिष्ट कला शैली के विकास के लिए निश्चित रूप से अनुकूल थीं।

चौर पंचशिका शैली के लघु चित्रों में सामान्यत: लाल तथा कुछ चित्रों में नीली, हरी तथा पीली पृष्ठभूमि दर्शायी गई है। ये चित्र जैन चित्रों की भाँति सादे हैं जिनमें महिलाओं के विभिन्न भावात्मक हाव-भाव; जैसे- पतली कटि, तीखी नसिका, विशाल नेत्र तथा चौकोर चेहरे को प्रदर्शित किया गया है। ऐसे चित्रों में पारस्परिक वनस्पति, पत्तियों से भरी चट्टान तथा नीली आभा से युक्त जीवन का चित्रण किया गया है जो कि 15वीं सदी के उत्तरार्द्ध के धार्मिक चित्रों की विशेषता नहीं थी। इसलिए माना जाता है कि चौर पंचशिका शैली के चित्र पारंपरिक विषय-वस्तु तथा स्थापित परंपरा से हटकर थे। आगे जब ऐसे लघु चित्रण में कृष्ण गाथा जैसे लोकप्रिय विषयों तथा राग माला अथवा मृगावती जैसे विषयों का समावेशन हुआ, तो इसने कलाकारों के लिए विचारों के नए द्वार खोल दिए। इन लघु चित्रों ने राजस्थानी चित्रकला शैली की उत्पत्ति तथा विकास में बहुत अधिक योगदान दिया।

अभ्यास प्रश्न:- चित्रकला की चौर पंचशिका एवं जैन शैलियों की विवेचना कीजिए। क्या चौर पंचशिका शैली को पोथी प्रारूप का पूर्ववर्ती माना जा सकता है?

(UPSC-2012)

मुगलकालीन चित्रकला

■ मुगल काल में चित्रकला के विभिन्न रूप

1. **स्तंभ चित्रकारी**- अकबर के काल में फतेहपुर सीकरी की दीवारों पर हिंदू एवं मुस्लिम चित्रकारों के द्वारा अनेक चित्र उकेरे गए।

2. **पांडुलिपि चित्रकारी**- इसके अंतर्गत विभिन्न ग्रंथों के चित्र बनाए गए। उदाहरण के लिए, रामायण, महाभारत, नल-दमयंती की कथा, पंचतंत्र आदि।

3. **छवि चित्रकारी**- छवि चित्रकारी यूरोपीय पुनर्जागरण के प्रभाव में विकसित हुई तथा भारत में अकबर के काल में पहली बार पुर्तगीजों ने इसे आरंभ किया था।

फिर यूरोपीय प्रभाव में ही एक और नवीन तकनीकी का आगमन हुआ था, जिसमें एक ही सतह पर नजदीक की वस्तु को बड़ा बनाकर तथा दूर की वस्तु को छोटा बना कर प्रस्तुत किया जाता था, इसे 'Technique of Foreshortening' कहा जाता था।

■ हुमायूँ कालीन चित्रकला

मुगलकालीन चित्रकला का इतिहास हुमायूँ के साथ आरम्भ होता है क्योंकि बाबर के पास चित्रकला के लिए उचित समय का अभाव रहा था। बताया जाता है हुमायूँ जब ईरानी शासक शाह तहमास्प प्रथम के दरबार से लौटा था, तो अपने साथ दो प्रमुख चित्रकारों को लेकर आया था। ये चित्रकार थे- मीर सैयद अली तथा ख्वाजा अब्दुस समद, ये प्रमुख चित्रकार वहजाद के शिष्य थे। इनके द्वारा खानदान-ए-तैमूरिया का चित्रण किया गया।

■ अकबरकालीन चित्रकला

अकबर के काल में स्थापत्य कला के समानान्तर चित्रकला का भी विकास हुआ। अकबर चित्रकला का महान संरक्षक था। अबुल फज़ल के अनुसार, अकबर के तस्वीरखाने में 17 चित्रकार थे। इनमें सबसे अग्रणी चित्रकार दसवंत था। मुगल काल में चित्रकारी व्यक्तिगत प्रयास न होकर एक सामूहिक प्रयास था क्योंकि एक ही चित्र के अलग-अलग हिस्से अलग-अलग चित्रकारों के द्वारा बनाए जाते थे। अकबर ने इस अवधारणा को अस्वीकार कर दिया था कि चित्रकला इस्लाम की मूल भावना के विपरीत है। बदले में उसका यह मानना था कि चित्रकार में ईश्वर को पहचानने की अद्‌भुत क्षमता होती है क्योंकि जब एक चित्रकार तस्वीर बनाता है, तब उसे अपनी

सीमाओं का ज्ञान होता है कि वह सब कुछ कर सकता है, किंतु चित्र में जान नहीं डाल सकता।

अकबर के अधीन ईरानी चित्र शैली तथा भारतीय चित्र शैली के बीच बेहतर सामंजस्य देखने को मिलता है। उसके काल में चित्रकला पर भारतीय तत्वों का प्रभाव बढ़ गया।

■ ईरानी और भारतीय चित्रकला में अंतर के बिंदु

1. ईरानी चित्रकला में शिकार, युद्ध आदि चित्रों पर विशेष बल दिया जाता था, जबकि भारतीय चित्रकला में धार्मिक विषयों पर बल था।
2. ईरानी चित्रों की बनावट में चौड़े ब्रश का प्रयोग किया जाता था, जबकि भारतीय चित्रों में गोल ब्रश का प्रयोग होता था। उसी प्रकार, भारतीय चित्रकला में गहरे नीले तथा लाल रंग का प्रयोग किया जाता था।

■ जहाँगीरकालीन चित्रकला

जहाँगीर की चित्रकला में व्यक्तिगत दिलचस्पी थी। वह यह दावा करता था कि अगर एक ही चित्र को अलग-अलग कलाकार मिलकर बनाते हैं, तो मैं इस चित्र को देखकर ही पहचान सकता हूँ कि इस चित्र का कौन सा अंश किस चित्रकार ने बनाया है। जहाँगीर के दरबार में कई महत्वपूर्ण चित्रकार थे। उदाहरण के लिए, अबुल हसन, उस्ताद मंसूर, बिशन दास आदि। उस्ताद मंसूर पशु पक्षियों का चित्र बनाने में निपुण था। फिर जहाँगीर ने बिशन दास को ईरान के दरबार में भेजा था, जहाँ से वह ईरान के शाह और उसके अमीरों की तस्वीरें उतारकर लाया था।

जहाँगीरकालीन चित्रकला की विशेषताएँ-

1. इस काल में पांडुलिपि चित्रकारी का महत्व कम हो गया, जबकि छवि चित्रकारी का महत्व बढ़ गया।
2. जहाँगीर के काल में प्रकृति, पशु तथा पक्षी के चित्रण पर अधिक बल दिया गया था।
3. इस काल में चित्रकला के माध्यम से राजत्व का दैवीकरण किया गया क्योंकि अब मुगल बादशाह के साथ आभामंडल भी चित्रित किया जाने लगा।
4. जहाँगीर की छवि चित्रकारी में एक महत्वपूर्ण तकनीकी विकास डेकोरेटेड मार्जिन के रुप में देखने को मिलता है। इसके अंतर्गत तस्वीर के हासिए पर फूल-पत्ती आदि के चित्र बनाकर तस्वीर को सजाया जाता था।
5. फिर हम जहाँगीर के काल में यूरोपीय कला का भी गहरा प्रभाव देखते हैं। उदाहरण के लिए, यूरोपीय चित्रकारी के प्रभाव में मरियम यीशु, पंख वाले देवदूत, गरजते बादल आदि के चित्र बनाए जाने लगे थे, किंतु मुगल चित्रकला में तैल चित्रकला अनुपस्थित थी।

■ शाहजहाँ और औरंगजेब कालीन चित्रकला

शाहजहाँ के काल में मुगल चित्रकला का अवसान होने लगा क्योंकि चित्रों के निर्माण में मौलिकता की जगह अलंकरण तथा सजावट पर विशेष बल दिया जाने लगा।

औरंगजेब ने तो चित्रकला को इस्लाम विरोधी करार देकर उस पर पाबंदी लगा दी। किंतु पतन के बावजूद भी मुगल चित्रकला ने विविध क्षेत्रीय शैलियों को प्रभावित किया।

■ चित्रकला की क्षेत्रीय शैलियाँ

- **राजस्थानी चित्रकला**- राजस्थानी चित्रकला का एक लंबा इतिहास रहा है। किंतु 15वीं सदी के पश्चात् यह स्पष्ट रूप से उभरकर आई। राजस्थानी चित्रकला में प्रकृति, पशु-पक्षी आदि के चित्रण पर विशेष बल दिया गया। इसके अंतर्गत प्रमुख धार्मिक ग्रंथों का भी चित्रण हुआ। इसमें रागमाला का चित्रण भी शामिल है। राजस्थानी कला पर मुगल कला का भी प्रभाव देखा गया। फिर जब मुगल साम्राज्य का विघटन हुआ, तो राजस्थानी कला की विभिन्न क्षेत्रीय शैलियाँ उभरकर आईं, उदाहरण के लिए, मेवाड़ शैली, आमेर-जयपुर शैली, बूंदी-कोटा शैली, बीकानेर शैली आदि।

- **किशनगढ़ शैली**- इसका विकास भी राजस्थान और आस-पास के क्षेत्रों में हुआ था। इसके संस्थापक सामंत सिंह थे, जो प्रमुख साहित्यकार और सौंदर्य शास्त्री थे। कृष्ण भक्ति में उनकी गहरी अभिरुचि थी। किशनगढ़ शैली में नायिकाओं के चित्रण पर विशेष बल दिया गया तथा कृष्ण और राधा के संबंधों में विभिन्न भाव एवं भंगिमाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया।

- **मिथिला अथवा मधुबनी शैली**- इस शैली के अंतर्गत सामान्यत: दो प्रकार की चित्रकारी की गई- स्तंभ चित्रकारी तथा अरिपन। स्तंभ चित्रकारी के तहत घरों की दीवारों को सजाया गया अथवा कोहवर का निर्माण किया गया। जहाँ दीवारों के चित्र के विषय धार्मिक होते थे, वहीं कोहवर में गैर-धार्मिक चित्र बनाए जाते थे।

एक, दूसरे प्रकार का चित्र अरिपन कहलाता था। इसके अंतर्गत चावल को कूटकर रेग अथवा पानी की सहायता से चित्र उकेरे जाते थे। इस प्रकार के चित्र या तो आँगन में बनाए जाते हैं या घर की चौखट के सामने।

- **मंजूषा शैली:** भागलपुर क्षेत्र में लोकगाथाओं में अधिक प्रचलित बिहुला-विषहरी की कथाएँ ही इस चित्रशैली में चित्रित होती हैं। मूलत: भागलपुर (अंग) क्षेत्र में सुपरिचित इस चित्रशैली में मंदिर जैसी दिखने वाली एक मंजूषा, जो सनर्ड की लकड़ियों से बनाई गई होती है, पर बिहुला-विषहरी की गाथाओं से संबंधित चित्र कूचियों द्वारा बनाए जाते हैं।

• **दक्कन शैली:** इस शैली का प्रधान केन्द्र बीजापुर था, परन्तु इसका विस्तार गोलकुंडा एवं अहमदनगर राज्यों में भी था। रागमाला के चित्रों का चित्रांकन इस शैली में विशेषरूप से किया गया है। इस शैली के महान संरक्षकों में बीजापुर के अली शाह तथा उसके उत्तराधिकारी इब्राहिम शाह थे। इस शैली के प्रारंभिक चित्रों पर फारसी चित्रकला का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। इस शैली की वेशभूषा पर उत्तर भारतीय (विशेष रूप से मालवा) शैली का प्रभाव पड़ा है।

• **गुजराती शैली:** गुर्जर या गुजराती शैली के नाम से जानी जाने वाली चित्रकला की इस शैली में पर्वत, नदी, सागर, पृथ्वी, अग्नि, बादल, क्षितिज, वृक्ष आदि विशेषरूप से बनाए गए हैं। इस शैली के चित्रों की प्राप्ति मारवाड़, अहमदाबाद, मालवा, जौनपुर, अवध, पंजाब, नेपाल, प. बंगाल, उड़ीसा तथा म्यांमार तक होती है। जिससे सिद्ध होता है कि इसका प्रभाव क्षेत्र काफी विस्तृत था। इस शैली में रागमाला के भी चित्रों का चित्रांकन किया गया है। मुगल सम्राट अकबर के समय के चित्र भी इस शैली से प्रभावित थे। इस कला शैली को प्रकाश में लाने का श्रेय डॉ. आनंद कुमार स्वामी को प्राप्त है।

■ **राजपूत शैली:**

मुगल काल के अंतिम दिनों में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक राजपूत राज्यों की उत्पत्ति हो गई, जिनमें मेवाड़, बूंदी, मालवा आदि उल्लेखनीय हैं। इन राज्यों में विशिष्ट प्रकार की चित्रकला शैली का विकास हुआ। इन विभिन्न शैलियों में कुछ विशेषताएं उभयनिष्ठ दिखाई दीं, जिसके आधार पर उन्हें 'राजपूत शैली' नाम प्रदान किया गया। चित्रकला की यह शैली काफी प्राचीन प्रतीत होती है, किन्तु इसका वास्तविक स्वरूप 15वीं शताब्दी के बाद ही प्राप्त होता है। यह वास्तव में राजदरबारों से प्रभावित शैली है जिसके विकास में कन्नौज, बुंदेलखण्ड तथा चंदेल राजाओं का सराहनीय योगदान रहा है।

• **मेवाड़ शैली:** मेवाड़ शैली राजस्थानी जनजीवन व धर्म का जीता-जागता स्वरूप प्रस्तुत करती है। इतिहासवेत्ता तारकनाथ ने 7वीं शताब्दी में मारवाड़ के प्रसिद्ध चित्रकार श्रीरंगधर को इसका संस्थापक माना है, लेकिन उनके तत्कालीन चित्र उपलब्ध नहीं हैं। रागमाला के लिए 16वीं शताब्दी में महाराणा प्रताप की राजधानी चावड़ में बनाई गई चित्रावली में लोककला का प्रभाव तथा मेवाड़ शैली के स्वरूप चित्रित हैं। रागमाला चित्रावली दिल्ली के संग्रहालय में सुरक्षित है।

• **जयपुर शैली:** जयपुर शैली का युग 1600 से 1900 ई. तक माना जाता है। इस शैली के अनेक चित्र शेखावटी में 18वीं शताब्दी के मध्य व उत्तरार्द्ध में भित्ति चित्रों के रूप में बने हैं। इसके अतिरिक्त सीकर, नवलगढ़, रामगढ़, मुकुन्दगढ़, झुंझूनु इत्यादि स्थानों पर भी इस शैली के भित्ति चित्र प्राप्त होते हैं। जयपुर शैली के चित्रों में भक्ति तथा श्रृंगार का सुंदर समन्वय मिलता है। कृष्ण लीला, राग-रागिनी, रासलीला के अतिरिक्त शिकार तथा हाथियों की लड़ाई के अद्‌भुत चित्र बनाए गए हैं।

• **बीकानेर शैली:** मारवाड़ शैली से संबंधित बीकानेर शैली का सर्वाधिक विकास अनूप सिंह के शासन काल में हुआ। रायलाल, अली रजा, हसन रजा, आदि इस राज शैली के उल्लेखनीय कलाकार थे। इस शैली पर पंजाबी शैली का भी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है क्योंकि बीकानेर क्षेत्र उत्तर में पंजाब के समीप ही स्थित है।

• **मालवा शैली:** मालवा शैली की चित्रकला में वास्तुशिल्पीय दृश्यों की ओर झुकाव सावधानीपूर्वक तैयार किया गया। इसमें सपाट, किन्तु सुव्यवस्थित संरचना, श्रेष्ठ प्रारूपण, शोभा हेतु प्राकृतिक दृश्यों का सृजन तथा रूपों को उभारने के लिए रंगों के धब्बों का सुनियोजित उपयोग दर्शनीय है।

• **बूँदी शैली:** 17वीं शताब्दी के प्रारंभ में मेवाड़ शैली की ही एक स्वतंत्र शाखा के रूप में विकसित बूँदी शैली के प्रमुख केंद्र कोटा, बूँदी और मारवाड़ थे। बूँदी राज्य की स्थापना 1341 में राव देव ने की थी, लेकिन चित्रकला का विकास राव सुरजन से प्रारंभ हुआ, राव रतन सिंह ने दीपक और भैरवी राग पर सुन्दर चित्र बनवाए। शत्रुशाल सिंह ने छत्रमहल का अलिंद बनवाया। जिसमें 18वीं शताब्दी में सुन्दर भित्ति चित्रण किया गया।

• **अलवर चित्रकला शैली:** इस शैली की स्थापना 1775 में अलवर के राजा प्रताप सिंह ने की थी। इस शैली के चित्रों में मुगलकालीन चित्रों जैसा बारीक काम, परदों पर धुएं के समान छाया तथा रेखाओं की सुदृढ़ता दर्शनीय है।

■ **पहाड़ी चित्रकला शैली:**

राजपूत शैली से ही प्रभावित पहाड़ी चित्रकला हिमालय के तराई में स्थित विभिन्न क्षेत्रों में विकसित हुई। परन्तु इस पर मुगलकालीन चित्रकला का भी प्रभाव दृष्टिगत होता है। पाँच नदियों- सतलुज, रावी, व्यास, झेलम तथा चेनाब का क्षेत्र पंजाब तथा अन्य पर्वतीय केन्द्रों; जैसे- जम्मू-कांगड़ा, गढ़वाल आदि में विकसित इस चित्रकला शैली पर पर्वतीय क्षेत्र के निवासियों की भावनाओं तथा संगीत व धर्म संबंधी परंपराओं की स्पष्ट छाया देखी जा सकती है। पहाड़ी शैली के चित्रों में प्रेम का विशिष्ट चित्रण दृष्टिगत होता है। कृष्ण-राधा के प्रेम के चित्रों के माध्यम से इनमें स्त्री-पुरूष प्रेम संबंधों को बड़ी बारीकी एवं सहजता से दर्शाने का प्रयास किया गया है।

• **बसोहल शैली:** चित्रकला की इस शैली का जन्म हिन्दू, मुगल तथा पहाड़ी शैलियों के समन्वयन से हुआ है जिसमें मुगल शैली की भाँति तथा पुरूषों के कपड़ों का प्रयोग किया गया है, जबकि चेहरे स्थानीय लोक कला पर आधारित है। यह

शैली हिन्दू धर्म एवं परम्परा से अधिक प्रभावित रही और विष्णु एवं उनके दशावतारों का अधिक चित्रण किया गया है।

- **गुलेरी शैली:** चित्रकला की पहाड़ी शैली के अन्तर्गत विकसित गुलेरी शैली के चित्रों का मुख्य विषय रामायण तथा महाभारत की घटनाएं रही हैं। इस शैली में इतना सशक्त एवं सजीव रेखांकन किया गया है कि मानव आकृतियों के अंग-प्रत्यंग अपनी स्वाभाविकता से दृष्टिगोचर होते हैं।
- **गढ़वाल शैली:** इस शैली का विस्तार मध्यकाल के गढ़वाल राज्य में हुआ। गढ़वाल राज्य के नरेश पृथपाल शाह के दरबार में रहने वाले दो चित्रकारों- शामनाथ तथा हरदास ने इस शैली को जन्म दिया।
- **जम्मू शैली:** मुगल शैली से प्रभावित इस शैली का विकास जम्मू क्षेत्र में हुआ क्योंकि नादिरशाह के द्वारा दिल्ली को भयाक्रान्त करने से दिल्ली दरबार के चित्रकारों ने भागकर पहाड़ी राजाओं के यहाँ शरण ली एवं नवीन शैली के चित्रों का निर्माण किया।
- **कांगड़ा शैली:** भारतीय चित्रकला के इतिहास के मध्ययुग में विकसित पहाड़ी शैली के अन्तर्गत कांगड़ा शैली का विशेष स्थान है। इसका विकास कचोट राजवंश के राजा संसार चन्द्र के कार्यकाल में हुआ। यह शैली दर्शनीय तथा रोमांटिक है। इसमें पौराणिक कथाओं और रीतिकालीन नायक-नायिकाओं के चित्रों की प्रधानता है तथा गौण रूप में व्यक्ति चित्रों को भी स्थान दिया गया है। इस शैली में सर्वाधिक प्रभावशाली आकृतियां स्त्रियों की हैं जिसमें चित्रकारों ने भारतीय परम्परा के अनुसार, नारी के आदर्श रूप को ही ग्रहण किया है।

■■■

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR